Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H. D. Jain College, Ara.

Notes for M.A. sem - I, CC-I

Topic - इतिहास में विषय-वस्तु :- प्रारंभिक इतिहासविदों ने घटना मात्र को ही इतिहास की विषय-वस्तु माना है। पुनर्जागरण आंदोलन के उपरांत इतिहास की विषय-वस्तु का स्वरूप विस्तृत होता गया। निरंतर परिवर्तित स्वरूप का एकमात्र कारण सामाजिक मान्यताओं तथा मूल्यों में परिवर्तन रहा है, लेकिन जब इतिहासविदों ने घटना का संबंध मानवीय मस्तिष्क के साथ किया तो इतिहास, दर्शन का गूढ़ विषय बन गया।

प्रमुख रूप से इतिहास विषय-वस्तु के संबंध में दार्शनिक तथा व्यावसायिक अवधारणाएँ है-

इतिहास विषय-वस्तु की दार्शनिक अवधारणा :- कलिंग वुड ने इतिहास की विषय-वस्तु उसे (विचार प्रक्रिया) माना है। जिसकी पुनरानुभूति इतिहासविद् मस्तिष्क में हो सके। इनके अनुसार ऐतिहासिक चिंतन अनुभव तथा चेतना नहीं, बल्कि प्रतिबिम्बित विचार है। इस प्रकार प्रतिबिम्बित विचार ही इतिहास का विषय-वस्तु होता है, इसके अतिरिक्त प्रत्येक परावर्तित क्रिया उद्देश्यपूर्ण होती है। इसी को इतिहास का विषय-वस्तु कह सकते है;

हीगल ने कहा है कि इतिहास का विषय-वस्तु समाज तथा राज्य है। इस प्रकार इतिहास-विद् विषयवस्तु की गवेषणा में प्रत्येक घटना के बाह्य तथा आंतरिक स्वरूप की विवेचना करता है।

→

→ बाह्य स्वरूप के तहत शारीरिक गतिविधियों को व आंतरिक स्वरूप में विचार का अध्ययन होता है। इतिहासकार कार्यों के परिवेश में विचार को समझता है, क्योंकि सभी इतिहास विचारों का इतिहास होते हैं।

इतिहास का क्षेत्र :- प्राचीन काल से आधुनिक काल तक इतिहास का स्वरूप निरंतर परिवर्तनशील रहा है। उसके विकसित स्वरूप का एकमात्र आधार विभिन्न कालों के सामाजिक मूल्य तथा उनकी सामाजिक आवश्यकताएँ रही हैं। इतिहास के क्षेत्र के अंतर्गत, जब इतिहासविद् किसी घटना का क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत करता है, तो उसके समक्ष तीन प्रमुख प्रश्न होते है — घटना क्या है, वह कैसे घटी? व क्यों घटी?। इतिहास के क्षेत्र के अंतर्गत मनुष्य के एक साधारण कार्य से लेकर उसकी विविध उपलब्धियों को क्रमबद्ध प्रस्तुत किया जाता है।

यद्यपि प्रकृति का अध्ययन इतिहास के क्षेत्र के बाहर है, फिर भी इतिहास में प्रकृति की पूर्ण उपेक्षा नहीं है, क्योंकि बाक्ल के अनुसार "मनुष्य के कार्यों तथा उपलब्धियों पर प्रकृति अथवा प्राकृतिक घटनाओं का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।" अतः प्रकृति तथा भौगोलिक परिस्थितियों के परिवेश में ही मानवीय कार्यों एवं उपलब्धियों का अध्ययन इतिहास क्षेत्र के अन्तर्गत होना चाहिए।

आज का इतिहासविद् इतिहास के किसी विशिष्ट विषय का विशिष्ट ज्ञान रखता है। वह अपने ज्ञान से संबंधित सामाजिक-आर्थिक विषय का उत्तर देता है। इतिहास के क्षेत्र का यह वर्गीकरण आधुनिक यांत्रिक युग की ही देन है। परिणामस्वरूप इतिहास का विभाजन केवल प्राचीन, मध्ययुगीन और आधुनिक काल में किया जाता है। इसके अंतर्गत अनेक छोटी-से छोटी शाखाओं पर शोध करके इतिहासकारों ने विशिष्ट ज्ञान प्राप्त किया है। इस प्रकार इतिहास का क्षेत्र निरंतर विकसित होता जा रहा है।